kakaji:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:35 PM Page 8

उन्हें नई ऊर्जा प्रदान करती थी। विश्वविद्यालय प्रयोग हाथ से निकल जाने पर उन्होंने मात्र 2-3 वर्षों के अंदर चित्रकूट में शिक्षण, स्वास्थ्य, स्वावलंबन व सदाचार के विशाल नए प्रकल्प खड़े कर दिए।

वैचारिक दृष्टि से नानाजी से असहमत रहने वाले सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री प्रभाष जोशी ने इस पर एक लेख लिखकर उसका शीर्षक दिया था - "ऐसे जीवट पर तिलक करो।"

नानाजी जन्मजात खोजी-प्रवृत्ति के थे। गीता का एक श्लोक उनकी जिज्ञासा का कारण बन गया। श्रीकृष्ण ने कहा कि वृक्षों में मैं 'पीपल' हूँ। क्या बात है पीपल में। लखनऊ के वनस्पति उद्यान के निदेशक से उन्होंने अपनी जिज्ञासा प्रकट की। उन्होंने बताया कि वृक्षों में एक मात्र पीपल ही ऐसा है जो चौबीसों घण्टे आक्सीजन छोड़ता है।

इसी प्रकार, उनकी जिज्ञासा का विषय बना 'हिरण्यकश्यप' जैसे दानव के यहां प्रह्लाद जैसा भक्त कैसे पैदा हो गया? शोडष संस्कारों का अध्ययन करते समय उनकी सामाजिक दृष्टि यह ढूंढ़ने में लग गई कि अग्नि को साक्षी बनाकर भावी दम्पति एक-दूसरे के प्रति अपने कर्तव्य का वचन तो देते हैं। पर इसमें कहीं भी समाज के प्रति अपने कर्तव्य को उल्लेख क्यों नहीं है।

नानाजी संघ के निष्ठावान स्वयंसेवक होने के बावजूद वैचारिक दृष्टि से संघ के विरोधियों के भी विश्वासपात्र थे। सार्वजनिक जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं, जहां के जाने-माने लोग नानाजी के मित्र न रहे हों।

उनके निर्वाण के बाद 'पायनियर' अंग्रेजी दैनिक के संपादक ने लिखा "उन्होंने अपने मन की बात कहने में कभी भी संकोच नहीं किया, भले ही वे बातें उनके संगठन की आलोचना ही क्यों न करती हों? उनमें वह योग्यता थी कि दलगत सोच की सीमाओं को लांघकर राष्ट्रहित से प्रेरित अपनी आवाज बुलन्द करे।"

श्रीमती इंदिरा गांधी के दु:खद अवसान से उत्पन्न विषम परिस्थिति में देशभक्ति से प्रेरित उन्होंने श्री राजीव गांधी को समर्थन देने की अपील की थी। भाजपा व संघ के कुछ कार्यकर्ता इससे बहुत नाराज भी हुए थे। पर उन्होंने इसकी चिंता नहीं की।

भोपाल से प्रकाशित दैनिक 'नवभारत' ने लिखा "देश के सामाजिक, राजनैतिक जीवन में वे आदर्श पुरूष व निष्काम कर्मयोगी थे। उनकी गणना उस वर्ग में की जाएगी, जिसमें राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन, आचार्य नरेन्द्रदेव, आचार्य विनोबा भावे जैसे संत राजनीतिज्ञ हुए हैं।"

नानाजी का जाना केवल संघ परिवार की ही क्षति नहीं है। पूरे भारत के सार्वजनिक क्षेत्र में नानाजी के बाद एक भी 'सर्वमान्य व्यक्तित्व' नहीं रहा।

नानाजी के तप:पूत जीवन की एक झलक **नवदधीचि नानाजी** इस प्रकाशन में देखने को मिलेगी। मानवीय संवेदनाओं से सराबोर उनके जीवन का प्रत्येक क्षण "मैं अपने लिए नहीं, अपनों के लिए हूँ - और अपने वे हैं जो सदियों से उपेक्षित एवं पीड़ित हैं" इस चिंतन को प्रत्यक्ष कृति में परिवर्तित करने में बीता।

नानाजी आत्मविलोपी थे। मानव-जीवन को त्रस्त करने वाली लोकेषणा, पुत्रेषणा या वित्तेषणा - उन्हें कभी भी अपने पथ से विचलित नहीं कर पाई। जिन लाखों लोगों को उनके स्नेहिल संपर्क का अवसर मिला - वे सभी उनके बहुआयामी इंद्रधनुषी व्यक्तित्व से चमत्कृत हैं। एक अतिसाधारण निर्धन परिवार में उत्पन्न, बाल्यावस्था में विद्यालयीन शिक्षा से वंचित व्यक्ति अपनी असाधारण प्रतिभा, कर्मठता, लगन, कार्य-कुशलता और संकल्पशक्ति के बल पर "मानव से महामानव" बन जाता है। उनके जीवन के विभिन्न आयामों से नई पीढ़ी को परिचित एवं अनुप्राणित करने हेतु दीनदयाल शोध संस्थान ने अनेक खण्डों में उनके जीवन, चिंतन, लेखन, भाषण, साक्षात्कार, पत्राचार आदि को प्रकाशित करने का निर्णय किया है। प्रस्तुत **नवदधीचि नानाजी** उस प्रकाशन की प्रथम कड़ी श्रद्धांजलि के रूप में समर्पित है। अगले प्रकाशन उनके संपूर्ण व्यक्तित्व का दर्शन करा सकेंगे। विश्वास है कि पाठकों के लिए यह प्रयास प्रेरणादायी होगा।

नानाजी गज़ब के परफेक्शनिस्ट थे। संपादक मंडल व उसके सहयोगियों ने उनके इस गुण का सम्मान करने का भरपूर प्रयास किया है। लेकिन अल्पावधि में किए गए प्रकाशन में कुछ त्रुटियां, कुछ कमियां रहने की आशंका बनी रहती है। इसके लिए हम पाठकों से क्षमाप्रार्थी हैं। आगे के खंडों में ये कमियां न रहने पाएं, इसे सुनिश्चित करने का भरोसा भी दिलाते हैं।

इस खंड की परिकल्पना में हमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक प्रमुख माननीय मदनदास देवी, दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव डा. भरत पाठक, संगठन सचिव श्री अभय महाजन व पूर्व सचिव डा. महेश चंद्र शर्मा का मार्गदर्शन मिला। यों तो संस्थान के सभी कार्यकर्ता इस कार्य में पूरे मनोयोग से लगे, लेकिन लेखन व संपादन में श्री राजेश कटियार की विशिष्ट भूमिका रही। श्री ज्ञानेंद्र बरतरिया ने भी लेखन में सहयोग दिया। श्री राकेश शुक्ला व श्री रवि शंकर ने प्रूफ पढ़ने में बहुत मेहनत की। श्रीमती ज्योति मुजुमदार ने चित्र जुटाने में सहयोग के अतिरिक्त मराठी से हिंदी अनुवाद में भी महती भूमिका निभाई। श्री अंशुमान सिंह ने कंपोजिंग में सहयोग तो किया ही, पुस्तक के प्रकाशन में हर दायित्व को पूरे मनोयोग से संभाला। श्री गब्बर सिंह का भी कंपोजिंग में सहयोग मिला। मेजर टी.आर. वर्मा एवं श्री अमिताभ वशिष्ठ का प्रशासकीय सहयोग हमेशा की तरह भरपूर था। अंत में, लेकिन बहुत महत्वपूर्ण, सुश्री दीपा सूद के ले-आउट, डिज़ाइनिंग का आप स्वयं आकलन कर सकते हैं। इन सभी को संपादक मंडल का हार्दिक आभार।

नमस्कार.

देवेंद्र स्वरूप

यादवराव देशमुख

अतुल जैन

नई दिल्ली, सितंबर, 2010